Research maGma

(An International Multidisciplinary Journal)

UGC Approved Journal No: 63465

Editor in Chief
Dr. Sanjay Kumar Singh

Associate Editor
Dr. T. Manichander

Research maGma

Research maGma is a multidisciplinary research journal, published monthly in all Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed .

Our Editorial Board

Dr Anil Kumar S.

Dr. Gatade Dattatraya Ganapati

Dr. Prashant Thote

Dr. Deepa Viswam

Dr. Anamika Kumari

Smt. B.S.Gunarekha

Dr. P. Samuel

Dr. Pargat Singh Garcha

Dr. M. Abdul Jamal

Dr. Tapas Pal

Dr. Gardi Balu Pandurang

Dr. Dnyaneshwar Babulal Shirode

Dr. Ashokkumar B. Surapur

Dr. N. Sasikumar

Dr. Saykar Satish Govind

Dr. A. Paul Albert

Dr. Atul Hansraj Salunke

Mr. Sanjeev Kumar Mishra

Dr. Neeta Sukhendrapal Singh

Dr. Kispotta Seraphinus

Dr. Santosh Kumar Behera

Dr. Sandhya Ayaskar

Dr. S. Aravind

Dr. Sandeep V. Binorkar

Dr. Raval Sandeep Krishnat

Dr. Mahesh Nawria

Dr. Tamanna Kaushal

Dr. Deepak B. Nale

Dr. Ram Chander

Dr. Sudhir Kumar Jena

Dr. S Maxwell Lyngdoh

Dr. Bhed Pal Gangwar

Dr. Shaikh Fahemeeda

Dr. Deshai Rajesh Bhaurao

Research maGma
An International Multidisciplinary Journal
ISSN- 2456-7078 IMPACT FACTOR- 4.520
VOL-1, ISSUE-10, DEC-2017

अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अमित कुमार सिंह
शोध छात्र, शिक्षा संकाय राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर (उ०प्र०)

संक्षिप्त सारांश :-

प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 11 के 500 विद्यार्थियों को शामिल किया गया और विवरणात्मक अनुसंधान प्रवृत्ति के द्वारा समायोजन मापनी से प्राप्त सांख्यिकी आँकड़ों को $\chi 2$ द्वारा विश्लेषित किया गया, जिसके परिणाम थे कि समायोजन स्तर पर कक्षा 11 के विद्यार्थी एक जैसे होते हैं, जिसमें क्षेत्र व लिंग के आधार पर विषमता नही पायी जाती है।

मुख्य शब्द :-

संवेगिक समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक समायोजन आदि।

प्रस्तावना :-

समायोजन क्षमता एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य हैं। प्रत्येक प्रणाली के सामने कुछ न कुछ परेशानियाँ ओर समस्याएँ होती है। एक व्यक्ति कितना प्रभावशाली है, यह उसकी समस्याओं की संख्या से ज्ञात नहीं होता, बल्कि उसकी प्रभाशीलता इस बात से स्पष्ट होती है, कि वह इन समस्याओं तथा जीवन की चुनौतियाँ को किस प्रकार स्वीकार करता है? उनके प्रति किस प्रकार से समायोजन करता है? समायोजन क्षमता के द्वारा व्यक्ति की आव यकताओं और वातावरण की मॉगों में एकरसता आ जाती है, उनमें सामंजस्य स्थापित हो जाता है। तब व्यक्ति का व्यवहार समायोजित कहा जाता है।

समायोजन क्षमता एक गतिशील प्रक्रिया है। संसार की प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होते हैं। संसार और समाज की बदलती हुई परिस्थितियों के साथ हम सभी को प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के अनुकूलन करने पड़ते हैं। इन अनुकूलन में हम कभी सफल होते हैं, और कभी असफल। अतः वातावरण के परिवर्तनों के प्रति व्यक्ति का सफल या असफल अनुकूलन ही समायोजन है।

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी सामाजिक वातावरण में रहता है। वह अपने माता–पिता, भाई–बहन, मित्र, पड़ोसी एवं समाज के लोगों से सम्बन्ध स्थापित कर विभिन्न प्रकार की व्यवहारिक क्रियाएँ सीखता है। कुछ लोगों के साथ कुछ दशाओं में उसे प्रसन्नता और संतुष्टि मिलती है। इनके साथ उसका समायोजन अच्छा रहता है।

व्यक्ति का वर्तमान और भविष्य का जीवन का जीवन सुखी एवं आनंदमय तभी हो सकता है, जब उसका व्यवहार समायोजित हो। बाह्य एवं आंतरिक वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में समर्थ व्यक्ति जीवन में सदैव सफलता प्राप्त करते हैं। प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को स्थिर, संतुलित रखने वाला व्यक्ति सुसमायोजित होता है। वह दूसरो के साथ सहानुभूति रखता है। अपनी परिस्थिति का तिरस्कार नहीं करता। उसके विचार, भाव, प्रतिक्रिया और व्यवहार एक सामान्य व्यक्ति के अनुभव होते हैं। वह केवल अपनी समस्याओं पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं करता। उसका सामाजिक दायरा भी विस्तृत होता है।

व्यक्ति के कुछ कार्य सहज क्रियाओं द्वारा किए जाते हैं, जिनके लिए व्यक्ति को विशेष प्रयास नहीं करने पड़ते हैं जबकि वह कुछ कार्य प्रेरकों के कारण करता है। व्यक्तित्व एवं व्यवहार की दृष्टि सें प्रेरकों द्वारा प्रेरित कार्य अधिक महत्वपूर्ण होते है। सर्वप्रथम व्यक्ति को किसी आवश्यकता की अनुभूति होती है, जिसके कारण मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न होता है, इस तनाव को दूर करने के लिए वह प्रयास करता

है। उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यदि व्यक्ति उन बाधाओं के साथ समायोजन कर लेता है, तो वह सृजनात्मक व उपयोगी मार्ग अपना लेता है।

समायोजन क्षमता की प्रक्रिया में व्यक्ति अपनी जैविक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु निरंतर प्रत्यनशील रहता है। वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से नहीं कर पाता और संघर्ष करता है। निराशा की स्थिति उत्पन्न होने पर वह कुंठाग्रस्त हो जाता है। उसका समायोजन क्षमता दूषित हो जाता है। सफल जीवन के लिए व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होना आवश्यक है। यदि व्यक्ति के जीवन में समायोजन तत्व नहीं है, तो वह समाज एवं स्वयं के लिए समस्या बन जायेगा। जीवन का दूसरा नाम समायोजन क्षमता है।

समायोजन क्षमता प्रक्रिया के दो प्रमुख तत्व है-

1. जीवन की आवश्यकता।
2. आवश्यताओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियाँ।

जीवन की आवश्यकता समाज जनित, जैव जनित, व्यक्तिगत, सामूहिक किसी भी प्रकार की हो सकती है। व्यक्ति की अपनी शारीरिक एवं मानसिक स्थितियाँ, सामर्थ्य अभिरूचियाँ, अभिवृत्तियॉ आदि आवश्यकताओं को प्रभावित करती है।

विद्यार्थी अपने परिवेश में जिन व्यक्तियों, वस्तुओं घटनाओं के सम्पर्क में आता है, उनमें वह समायोजन सीखता है। वह घर, समाज, विद्यालय, खेलकूद आदि में अपने को समायोजित करता है। समायोजन अच्छा होने पर विद्यार्थी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सफल होता है।

समायोजन क्षमता सतत् चलने वाली प्रक्रिया एवं सामंजस्य की स्थिति है, जो व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। समायोजन का अर्थ है, जीवन की परेशानियों, तनावों, कुंठाओं एवं समस्याओं को यथासंभव कम करना। परिस्थितियों के अनुरूप अपने व्यवहार को परिवर्तित कर शांतिपूर्ण ढंग से जीना।

समायोजन क्षमता द्वारा व्यक्ति को संतोष प्राप्त होता हे, और वह सामाजिक आदर्शों के अनुरूप समाज में व्यवहार करना सीख जाता है। समायोजन व्यक्ति के सामान्य क्षेत्र के अतिरिक्त संवेगात्मक, गृह, स्वास्थ्य, शैक्षणिक, व्यवसायिक, सामाजिक एवं आर्थिक आदि विशिष्ट क्षेत्रों में भी हो सकता है।

श्रेष्ठ समायोजन क्षमता के लक्षण :-

किशोर के व्यक्तित्व विकास के लिए समायोजन अत्यंत आवश्यक है। स्वास्थ्य, बुद्धि, मानसिक योग्यताऍ, शैक्षिक उपलब्धि, आकांक्षा स्तर, सामाजिक आर्थिक स्तर, पारिवारिक एवं विद्यालयी वातावरण, आत्मविश्वास, आत्मप्रत्यय, संवेगात्मकता, शहरी एवं ग्रामीण जीवन संरक्षणों की प्रतिष्ठा, यौन क्रियाऍ, कुंठा, चिंता आदि तत्व बालक के समायोजन को प्रभावित करते हैं। वह विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करता है। श्रेष्ठ समायोजन के निम्नलिखित लक्षण है–

1. समायोजित व्यक्ति अपनी परिस्थिति का तिरस्कार नहीं करता है।
2. समायोजन व्यक्ति दूसरों के साथ सहानुभूमि रखता है।
3. समायोजित व्यक्ति के विचार, प्रतिक्रियाऍ, भावनाऍ और व्यवहार सामान्य व्यक्ति के अनुभव होते हैं।
4. समायोजित व्यक्ति केवल अपनी समस्या के प्रति ही ध्यान केन्द्रित नही करता, वह अन्य बातों पर भी ध्यान देता है।
5. समायोजन व्यक्ति का सामाजिक क्षेत्र विस्तृत होता है।
6. कठिन परिस्थिति में जब समायोजन क्षमता की सम्भावना नही रहती तब कुसमायोजित व्यक्ति के व्यक्तित्व में असमानता दिखाई देती है। उसका व्यवहार अवांछनीय हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा समायोजन क्षमता का तात्पर्य विद्यार्थी को अपने सामाजिक व्यवहार में तादात्मीकरण स्थापित करना है। जिससे वे समाज को अपना अभूतपूर्ण योगदान दे सकें। इसका मापन ।ै द्वारा किया गया था।

सम्बन्धित साहित्य :-

एमैनुल डी (२०१३) – एमैनुल डी (2013) ने अध्ययन करते हुए पाया कि संस्कृत के विभिन्न आयामों पर किशोरो द्वारा परिर्वतन लाया जाता हैं जिसमे एक बौद्विक आकृति तैयार होती है। यह प्रयोगात्मक प्रकार का अनुसंधान किया गया था जिसमें परिणाम प्राप्त हुआ कि किशोरों की प्रगति समायोजन के साथ जुड़ी होती है जिसमे एक मित्रवत् घेरे में अपना विकास स्वस्थ समायोजन के साथ तैयार करते है।

देविका आर (२०१३) – देविका आर (2013) ने अपना अध्ययन समायोजन पर किया जिसके विश्लेषण व्यक्त करते है कि सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स समायोजन में औसत स्तर के होते है और सांवेगिक समायोजन में लड़के तथा लड़किया में अन्तर नही होता। परिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर शैक्षिक तथा वित्तीय समायोजन भी छात्र छात्राओं का समान होता हैं।

बीरबल साहा (२०१४) – बीरबल साहा (2014) ने ऐडजेस्टमेन्ट ऑफ सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स विथ रिस्पेक्ट टू जेन्डर एण्ड रेजिडेन्स'' पर अध्ययन किया। अध्यापन का उद्देश्य जेन्डर और रेजिडेन्स के सन्दर्भ में सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स के सम्बन्ध को देखना था इसके लिए न्यादर्श के रूप में पश्चिम बंगाल के पेरूलिया शहर से 471 विद्यार्थीयों पर न्यादर्श के रूप में यादृच्छित रूप से चयन किया गया था जिससे परिणाम प्राप्त हुआ कि ग्रामीण व शहरी आवासो में रहने वाले विद्यार्थियों में कोई समायोजन सार्थक अन्तर नही हैं। जबकि लड़कियाँ, लड़को की तुलना में अधिक समायोजित पायी गयी है।

अरोरा पी एण्ड सिंह जी (२०१४) – अरोरा पी एण्ड सिंह जी (2014) ने सेल्फ इफीकेशी और इमोशलन इन्टेलीजेन्स में अध्ययन किया और पाया कि दोनों सार्थक रूप से एक दूसरे की भविष्यवाणी करते है और पृथक्करण से जुड़े हैं।

पूजा भगत (२०१६) – पूजा भगत (2016) ने ''सेल्फ इफीकेशी एण्ड एडजेस्टमेन्ट ऑफ सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर जनरल एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट'' पर अध्ययन किया। यह अध्ययन सेकन्डरी स्कूल स्तर समायोजन को देखते हुए शैक्षणिक उपलब्धि और लिंग को आधार मानकर किया गया था। इसके लिए जम्मू कश्मीर के सांभा शहर से कक्षा 9 के 200 विद्यार्थियों कों न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया था जिन पवर जी0 पी0 माथुर और राजकुमार भटनागर के सेल्फ इफीकेशी उपकरण और समायोजन नापने के लिए प्रो0 ए.के.पी. सिन्हा तथा आर.पी. सिंह का समायोजन मापनी प्रयोग में लायी गयी थी। ऑकडो का विश्लेषण टी–परीक्षण द्वारा प्रयोग किया गया था जिसमें परिणाम प्राप्त हुआ कि छात्राए कम समायोजित थी जबकि सेल्फ इफीकेशी और शैक्षणिक उपलब्धि में छात्र छात्राएं समान थी।

अहमद और खांन (२०१६) – अहमद और खांन (2016) ने अपना अध्ययन समायोजन पर किया तथा उनकी योग्यता, अनुभव, क्षेत्र पर किया जिसमें परिणाम पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों ने योग्यता अनुभव तथा क्षेत्र के आधार पर कोई अन्तर नही पाया गया।

उद्देश्य :–

शोध समस्या से अध्ययन किये जाने वाले प्रमुख बिन्दुओं को व्यवस्थित करके सीमित व औपचारिक करते हुये शोधकर्ता ने निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये है–

अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत अध्ययन में निर्धारित किये गये उद्देश्यों के अध्ययन हेतु परीक्षण के लिये निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया था–

अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विधिपरक विज्ञान :–

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अनुसंधान था। इसकी समिष्ट जौनपुर जनपद के कक्षा 11 के विद्यार्थी थे, जिनसे उद्देश्यपरक न्यादर्श प्रवृत्ति द्वारा कुल 500 विद्यार्थियों का चयन किया गया। समायोजन मापनी हेतु डॉ० ए०के०पी० सिन्हा व आर० पी० सिंह का प्रयोग हुआ। विश्लेषण हेतु χ^2 सांख्यिकी प्रयुक्त की गयी।

विश्लेषण तथा व्याख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन क्षमता के लिये उद्देश्य निर्धारित किया था कि ''अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।'' इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना बनायी गयी थी कि ''अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियो के समायोजन के बीच सार्थक अन्तर नहीं है।'' इसके परीक्षण के लिये निम्नलिखित χ^2 परीक्षण तालिका का निर्माण किया गया था–

तालिका–4.4 अनुदानित/गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन की χ^2 विश्लेषण तालिका

समूह	समायोजन		योग
	उच्च	निम्न	
अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थी	65	63	128
गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थी	59	61	120
योग	124	124	248
χ^2	0.064		

उपरोक्त विष्लेशण तालिका से स्पष्ट है कि अनुदानित विद्यालय के उच्च समायोजित विद्यार्थी 65 और निम्न समायोजित 63 विद्यार्थी थे जबकि गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों का उच्च समायोजन 59 तथा निम्न समायोजन पर 61 थे। इनके बीच अभिकलित χ^2 का मान 0.064 था जो कि क;1द्ध के .05 सार्थकता स्तर पर 3.841 से कम था जिसके लिये बनायी गयी शून्य परिकल्पना ''अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन के बीच सार्थक अन्तर नहीं है'' स्थापित हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि दोनों समूह समान समायोजन वाले होते हैं जिसका प्रमुख करण बच्चों के दोनों विद्यालयों में समान समाजिक स्थिति के घर से आना है। प्रस्तुत अध्ययन के तरह ही पाठक (2009) के परिणाम थे, जो प्रस्तुत अध्ययन का समर्थन करते है।

शोध निष्कर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन से विष्लेशणोपरॉत निम्नलिखित निष्कर्श प्राप्त हुये है–

अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थी समान समायोजन स्तर वाले होते हैं, जिसमें क्षेत्र व लिंग के आधार पर विषमता नहीं पायी जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहमद और खांन (2016) : ''ए स्टडी आफ एडजेस्टमेन्ट ऑफ सेकन्डरी स्कूल रिसर्च इन रिलेशन टू देयर एजुकेशनल क्वालीफिकेसन्स एक्सीप्रीयेन्सेज एण्ड लोकेल्टी'' IJR वाल्यूम 5, इशू 2
2. अरोरा पी एण्ड सिंह जी (2014) : ''सेल्फ इफीकेशी एण्ड इमोशनल एन्टेलीजेन्स ऐज रिडक्टर्स आ एलाइनेशन एमंग ग्रेजेएट्स'' IJIRD वाल्यूम 3, इशू 8।
3. एमैनुल डी (2013) : एडजेस्टमेन्ट एमंग स्कूल गोइंग एडालशेन्स ए स्टडी इन उन्नाथुर विलेज अनुर ब्लॉक, कोयम्बटूर डिस्ट्रीक्ट IJHSSI वाल्यूम 2, इशू 1 पेज 7–12।
4. बीरबल साहा (2014) : ऐडजेस्टमेन्ट ऑफ सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स विथ रिस्पेक्ट टू जेन्डर एण्ड रेजिडेन्स'' पर अध्ययन किया साइंस एण्ड ऐजूकेशन पब्लिशिंग इन अमेरिकन जर्नल ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च पेज 1138–1143, वाल्यूम 2, इशू 12।
5. देविका आर (2013) : ''ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ द ऐडजेस्टमेन्ट ऑफ सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स'' जर्नल ऑन एजूकेशनल साइकालजी वाल्यूम 71, इशू 3।
6. पूजा भगत (2016) : सेल्फ इफीकेशी एण्ड एडजेस्टमेन्ट ऑफ सेकन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर जनरल एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट IJAPRR-ISSN 2350.1294ए वाल्यूम 3, इशू 8, पेज 917।
7. सिंह, अमित कुमार (2017) : ''अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' अमित कुमार सिंह शोध छात्र, शिक्षा संकाय राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर(उ०प्र०)